शिक्षक - शिक्षार्थी सम्बन्ध

सत्य ही कहा गया है कि बच्चे की सर्वप्रथम शिक्षिका उसकी माँ होती है। बालक जन्म के पश्चात सबसे पहले अपनी माता के संपर्क में आता है। माँ से ही उसमें अच्छे संस्कारों और अच्छी आदतों का विकास होता है। जैसे - जैसे वह बड़ा होता है, वैसे-वैसे उसका सामाजिक दायरा बढ़ता है और शिक्षा प्राप्ति हेतु वह विद्यालय जाता है। 'विद्यालय' मतलब वह स्थान जहाँ न सिर्फ छात्रों को विषय सम्बन्धी ज्ञान दिया जाता है बल्कि उनके व्यक्तित्व की अन्तर्निहित योग्यताओं को पहचान कर उनका विकास किया जाता है। घर में जो स्थान माता का होता है, विद्यालय में वही स्थान शिक्षिका का होता है। छात्र अपने दैनिक जीवन के कम से कम छह घंटे स्कूल में ही व्यतीत करते हैं। माता - पिता भी यही सोचकर अपने बच्चों को विद्यालय भेजते हैं कि वहाँ उनकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाएगा तथा उनके बच्चे एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में उभरकर भावी भविष्य के लिए तैयार होंगे। यहाँ शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाती है।

इन सभी तथ्यों से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि एक शिक्षक होने के नाते क्या हम अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह ईमानदारी से कर पा रहे हैं ? एक ही कक्षा में अलग - अलग योग्यताओं वाले विद्यार्थी होते हैं। उन सभी की क्षमताओं को पहचान कर उनके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना माता-पिता के साथ-साथ शिक्षकों का भी कर्तव्य है। यह तभी संभव है जब अध्यापक और छात्रों के बीच अच्छे एवं गरिमापूर्ण सम्बन्ध हों।

यह बात जग-जाहिर है कि प्यार और सम्मान मांगने से नहीं मिलता अपितु अपने कर्मों से अर्जित किया जाता है। यह बात हम सभी पर लागू होती है। एक अध्यापक अपने प्रेमपूर्ण और सहयोगी व्यवहार से अपने विद्यार्थियों के मन में अपनी एक ख़ास जगह बनाता है। बच्चे अपने शिक्षकों के व्यवहार, उनके पढ़ाने के तौर-तरीकों, अपने प्रति उनके लगाव से बहुत प्रभावित होते हैं। वे अपने विद्यार्थियों के लिए आदर्श भी हो सकते हैं। सच कहूँ मैंने अपने जीवन में समय नियोजन का महत्त्व अपनी एक अध्यापिका से ही सीखा। उनका व्यवहार हमारे प्रति इतना अच्छा था कि मैं उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। वे मेरे लिए एक आदर्श थीं और मैंने तभी यह निश्चय कर लिया था कि मैं भी बड़ी होकर शिक्षण के क्षेत्र में ही जाऊँगी।

एक शिक्षक किसी भी विद्यार्थी के मन में अपने विषय के प्रति रुचि जागृत भी कर सकता है और उसे अपने विषय से दूर भी कर सकता है। एक शिक्षक के रूप में हमारे कन्धों पर यह बहुत बड़ा दायित्व है कि हम हर विद्यार्थी पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान दें। सिर्फ विषय सम्बन्धी जानकारी देने से हमारे कर्तव्यों का निर्वाह नहीं होत। सभी बच्चे सभी विषयों में अच्छे हों, यह आवश्यक नहीं है। कई बार वे संकोच या डाँट पड़ने के डर से कक्षा में प्रश्न नहीं पूछते या हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर जानते हुए भी उत्तर देने से कतराते हैं। यहाँ हमारी भूमिका बहुत अहम् होती है कि हम उनके मन में व्याप्त भय को दूर करें और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। हम आधुनिक युग के शिक्षक हैं और हम यह भी जानते हैं कि बदलती हुई परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने आप को भी अपडेट रखने की जरूरत है। हमें अपने पढ़ाने के तरीकों में बदलाव लाने की आवश्यकता है ताकि कक्षा का हर विद्यार्थी कक्षा में पूर्ण रूप से ध्यान दे तथा विषय में आने वाली कठिनाइयों को बिना किसी डर या संकोच के अपने शिक्षक से पूछ कर दूर करे। यदि कोई बच्चा कक्षा में मन लगा कर नहीं पढ़ रहा या अपना गृहकार्य नहीं कर रहा है तो उसे डाँटने के बजाए उसके पीछे छिपे कारणों को जानने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। किसी भी विद्यार्थी की योग्यता का निर्धारण परीक्षा में उसके द्वारा प्राप्त किये गए अंकों के आधार पर ही नहीं लगाया जा सकता क्योंकि अंक तो उसकी विषय सम्बन्धी जानकारी के बारे में बताते हैं। आम तौर पर यह देखा जाता है कि जो बच्चे शैक्षणिक दृष्टि से थोड़े कमज़ोर होते हैं, वे संगीत, नृत्य, चित्रकला, खेलकूद, कंप्यूटर

आदि में बहुत अच्छे होते हैं। ऐसे में यदि उनकी इन प्रतिभाओं को निखारने का प्रयत्न किया जाए तो वे इन क्षेत्रों में उज्ज्वल भविष्य बना सकते हैं। शिक्षकों के द्वारा नोटबुक में लिखे गए तारीफ़ के शब्द उनके आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और उन्हें अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, अतः हमें एक अभिभावक की तरह उन्हें प्यार-दुलार से आगे बढ़ाने में उनकी मदद करनी चाहिए।

फ्रेडरिक फ्रोबेल ने शिक्षक की तुलना एक माली से करते हुए कहा था कि जिस तरह एक माली बगीचे के हर पौधे को सींचकर और उचित देख-रेख से पनपने में मदद करता है ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक भी अपने लाड-प्यार, उचित मार्गदर्शन एवं सहयोगपूर्ण व्यवहार से छात्रों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने में अहम् भूमिका निभाता है ताकि वे भविष्य की चुनौतियों का डटकर सामना कर सकें और देश के ज़िम्मेदार नागरिक बन सकें।

अंत में यही कहना चाहूँगी कि हमें अपने जीवन में दो प्रकार के लोग ही याद रहते हैं - एक वे जो अपनी कटु वाणी तथा कठोर व्यवहार से हमारा दिल दुखाते हैं दूसरे वे जो अपने प्रेमपूर्ण और सहयोगी व्यवहार से हमारे दिल में अपनी ख़ास जगह बनाते हैं। बच्चे भी उन्हीं शिक्षकों को अपना आदर्श मानते हैं जो उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाए बिना, उन्हें उनकी कमियों से अवगत कराएँ और उनके व्यक्तित्व को निखाने में अपना पूरा सहयोग दें।

धन्यवाद!

गायत्री शर्मा

(टी. जी. टी. हिंदी)